9

शैक्षिक चिन्तक फ्रोबेल

[Educational Thinker Froebel]

फ्रोबेल की जीवनी और कार्य

(Biography and Works of Froebel)

फ्रोबेल का जन्म 21 अप्रैल, 1782 को जर्मनी के थुरिन्नियन वन के ओवरवीस गाँव में हुआ था। इनका पूरा नाम फ्रेडरिक विल्हेम ऑगस्ट फ्रोबेल (Friedrich Wilhelm August Froebel) था। इनके पिता उसी गाँव में पादरी थे और माता सामान्य गृहणी थी। जब ये केवल 9 माह के थे इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास के बाद इनके पिता ने दूसरी शादी कर ली। इनके पिता अपने काम में व्यस्त रहते थे और विमाता इनकी तरफ कोई ध्यान नहीं देती थी। अपने बचपन में यह उपेक्षित बालक इधर-उधर घूमता रहता था। पर चूँकि घर का वातावरण धर्मप्रधान था इसलिए इस उपेक्षा के बाद भी इनमें धार्मिक संस्कारों की सुदृढ़ नींव पड़ गई।

जब ये 10 वर्ष के थे, इनके मामा इन्हें अपने यहाँ ले गए और वहीं एक स्कूल में इन्हें भर्ती करा दिया। यहाँ इनका पढ़ने में मन नहीं लगा। शिक्षकों को लगा कि ये बुद्धिहीन हैं, इसलिए उन्होंने इनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया और यहाँ भी ये उपेक्षित रहे। इनके मामा को जब यह लगा कि यह बालक पढ़ नहीं सकता तो उन्होंने इन्हें एक वन रक्षक के पास वन सम्बन्धी काम सीखने के लिए भेज दिया। इस समय इनकी आयु 15 वर्ष की थी। यहाँ ये दो वर्ष रहे। यहाँ रहकर इन्होंने वन रक्षक का काम तो नहीं सीखा परन्तु प्रकृति एवं वन्य जीव जन्तुओं के निकट रहकर इनमें एक तो प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ और दूसरे इनके मन-मस्तिष्क में इनके मूल दार्शनिक सिद्धान्त—'अनेकता में एकता' (Unity in Diversity) का बीजारोपण हो गया। इन्होंने देखा कि प्रकृति का प्रत्येक पेड़-पौधा और वन के सभी जीव-जन्तु अपनी प्रकृति के अनुसार स्वयं विकसित होते हैं। इस विकास के मूल तत्त्व की खोज करते-करते इन्होंने आत्मा-परमात्मा के अस्तित्व को पहचाना।

इसी बीच जब ये 17 वर्ष के थे, अपने भाई से मिलने जेना विश्वविद्यालय पहुँचे। इस विश्वविद्यालय के बौद्धिक वातावरण ने इन्हें अपनी ओर आकर्षित किया। इन्होंने विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया। इस विश्वविद्यालय में फ्रोबेल ने भाषा, गणित, विज्ञान एवं मनोविज्ञान का अध्ययन किया। परन्तु धनाभाव के कारण ये अपनी शिक्षा जारी नहीं रख सके और एक वर्ष बाद ही अपने घर लौट आए। घर लौटने पर इन्हें कृषि कार्य सीखने के लिए भेजा गया। पर उसी बीच इनके पिता बीमार हो गए और इन्हें लौटकर घर आना पड़ा। 1802 में इनके पिता का स्वर्गवास

Scanned with CamScanner

हो गया। अब इनके सामने जीविका की समस्या थी। 1802 से 1805 के बीच इन्होंने कई व्यवसाय अपनाए किन्तु असफल रहे। 1805 में ये फ्रेंकफर्ट (Frankfart) के नार्मल स्कूल में शिक्षक नियुक्त हुए। शिक्षक के रूप में कार्य करना इन्हें अच्छा लगा, इनका सोया हुआ शिक्षक जाग उठा, ये इस कार्य में बहुत रुचि लेने लगे। 1808 में ये पैस्टालॉजी की शिक्षा संस्था को देखने यवर्डन (Yverdon) पहुँचे। यह उस समय की बहुचर्चित शिक्षा संस्था थी। यहाँ रहकर इन्होंने पैस्टालॉजी की शिक्षण पद्धति में प्रशिक्षण प्राप्त किया। अब इनके मन में आगे शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न हुई। 1811 में इन्होंने शाटिन्जेन विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और उसके बाद बर्लिन विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। बर्लिन विश्वविद्यालय में ये उस समय के विख्यात प्रोफेसरों के सम्पर्क में आए। इन्होंने यहाँ गणित एवं खनिज विज्ञान का अध्ययन किया। प्रोफेसर वीज (Wiess) के संरक्षण में इन्होंने खनिज विज्ञान के क्षेत्र में विशेष अध्ययन किया। पर तभी 1813 में जर्मनी का नेपालियन से युद्ध छिड़ गया और फ्रोबेल सेना में भर्ती हो गए। सैनिक के रूप में कार्य करने में इनमें अनुशासन की भावना विकसित हुई। 1814 में ये सेना से वापिस आ गए और अपने प्रोफेसर वीज के संरक्षण में बर्लिन म्युजियम में कार्य करने लगे। पर यहाँ भी इनका मन नहीं लगा, इन्हें तो जीवन में शिक्षक बनना था; शिक्षाशास्त्री बनना था।

1817 में फ्रोबेल ने कीलहाऊ (Kielhau) में 'द यूनिवर्सल जर्मन इन्स्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन' नाम से एक शिक्षा संस्था की स्थापना की। उस विद्यालय में इन्होंने पैस्टालॉजी के शिक्षण सिद्धान्तों का प्रयोग किया और उनके गुण-दोषों को परखा। इस स्कूल से फ्रोबेल की ख्याति बढ़ने लगी, उनकी अपनी एक पहचान हो गई। 1826 में इन्होंने एक धनी युवती विल्हेमिन होफमिस्टर से विवाह कर लिया। अब फ्रोबेल की आर्थिक समस्या हल हो गई। दोनों मिलकर इस पुण्य कार्य में जुट गए। फ्रोबेल को सोचने-विचारने एवं लिखने का समय मिल गया, इन्होंने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों को लेखबद्ध करना शुरु कर दिया। शिक्षा से सम्बन्धित इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—मनुष्य की शिक्षा, विकास के द्वारा शिक्षा, मातृखेल एवं नर्सरी गीत। इससे फ्रोबेल की ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। ये जगह-जगह व्याख्यान देने बुलाए जाने लगे। ये स्वयं भी अपनी शिक्षण पद्धति के प्रचार एवं प्रसार में रुचि लेने लगे। इन्होंने सैंकड़ों शिक्षकों को अपनी शिक्षण पद्धति में प्रशिक्षित किया।

1831 में फ्रोबेल जर्मनी से स्विटजरलैण्ड गए। यहाँ इन्होंने कई संस्थाओं के संचालन का कार्यभार संभाला और अपनी शिक्षा पद्धति का प्रचार एवं प्रसार किया। यहाँ ये लगभग 6 वर्ष रहे। 1836 में ये जर्मनी लौट आए और पुनः अपने कार्य में जुट गए। 1837 में इन्होंने ब्लैकनबर्ग में 4 वर्ष से 8 वर्ष तक के बालकों के लिए एक स्कूल की स्थापना की और इसका नाम 'किण्डर गार्टन' रखा। जर्मन भाषा में किण्डर गार्टन का अर्थ होता है—बच्चों का बाग। किण्डर गार्टन में शिक्षक रूपी माली बच्चों रूपी पेड़-पौधों की देख-भाल करते हैं और उनके विकास के लिए उचित वातावरण तैयार करते हैं। फ्रोबेल ने अपना शेष जीवन इस संस्था को समर्पित कर दिया। परन्तु कुछ वर्ष बाद ही जर्मन सरकार को लगा कि फ्रोबेल समाजवाद का प्रचार कर रहे हैं अतः उसने फ्रोबेल के कार्यों पर रोक लगा दी। इससे फ्रोबेल को बहुत धक्का लगा, ये इस आघात को सहन नहीं कर सके और 1852 में सदा-सदा के लिए अलविदा हो गए।

Scanned with CamScanner

फ्रोबेल का दार्शनिक चिन्तन
(Philosophical Thoughts of Froebel)

फ्रोबेल प्रारम्भ से ही ईश्वरवादी थे। उस समय एक ओर जर्मनी में कान्ट, फिस्टे, हीगल, स्पिनोजा और डेकार्टे के दर्शन का बोलबाला था और दूसरी ओर वैज्ञानिक खोजों के निर्णय सामने आ रहे थे। फ्रोबेल पर इन सबका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। परन्तु इस क्षेत्र में इन्होंने जो सोचा और जिस आधार पर निर्णय लिए वे एकदम मौलिक हैं, इनकी अपनी दार्शनिक सोच है। हम यहाँ इनके दार्शनिक चिन्तन को तत्त्व मीमांस, ज्ञान मीमांसा और आचार मीमांसा के रूप में क्रमबद्ध करने का प्रयास करेंगे।

फ्रोबेल के दार्शनिक चिन्तन की तत्त्व मीमांसा

फ्रोबेल ने देखा कि सभी जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पौधों में अपनी जाति के रूप में विकसित होने की क्षमता है। यह विकास वे किसके द्वारा करते हैं, इसके सम्बन्ध में सोचते-सोचते इन्होंने आत्म तत्त्व को इसका कारण पाया। इनकी दृष्टि से इस सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर है। ईश्वर के विषय में इनका मत है कि यह अपने में पूर्ण है और सृष्टि के कण-कण में समान रूप से व्याप्त है। फ्रोबेल ने इसी को अनेक में व्याप्त एकता कहा है। मनुष्य को ये सृष्टि की श्रेष्ठतम कृति मानते थे क्योंकि वह अपनी मानसिक शक्तियों की श्रेष्ठता द्वारा इस एकता की अनुभूति कर सकता है। मनुष्य के जीवन को ये सप्रयोजन मानते थे, इनकी दृष्टि से आत्मज्ञान ही मनुष्य का सर्वोत्तम लक्ष्य है।

फ्रोबेल के दार्शनिक चिन्तन की ज्ञान मीमांसा

फ्रोबेल की दृष्टि से सृष्टि की प्रत्येक वस्तु विकासशील है और इस विकास की मूल शक्ति उसके अन्दर स्थित है जो कुछ मूल सिद्धान्तों के आधार पर विकास करती है। फ्रोबेल के अनुसार सृष्टि के जड़ पदार्थों एवं जीव जन्तुओं के इस क्रमिक विकास को जानना ज्ञान है और इसके विकास के मूल कारण ईश्वर को जानना सच्चा ज्ञान है। फ्रोबेल के अनुसार मनुष्य किसी भी प्रकार का ज्ञान अपनी अन्तःशक्तियों के द्वारा ही प्राप्त कर सकता है।

फ्रोबेल के दार्शनिक चिन्तन की आचार मीमांसा

फ्रोबेल शाश्वत नैतिक नियमों एवं मूल्यों में विश्वास करते थे। इनकी दृष्टि से नैतिकता व्यक्ति, समाज अथवा राष्ट्र सापेक्षिक नहीं होती, देश काल सापेक्षिक नहीं होती, यह ईश्वर द्वारा निश्चित होती है, शाश्वत होती है, सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक होती है। इनकी दृष्टि से सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् शाश्वत मूल्य हैं, मनुष्य का आचरण इन्हीं पर आधारित होना चाहिए।

फ्रोबेल का शैक्षिक चिन्तन
(Educational Thoughts of Froebel)

शिक्षा के क्षेत्र में फ्रोबेल कमेनियस, रूसो और पैस्टालॉजी के विचारों से अधिक प्रभावित थे और इनमें से भी सबसे अधिक पैस्टालॉजी के विचारों से। पैस्टालॉजी के द्वारा तो इन्होंने उनकी शिक्षण विधि में प्रशिक्षण प्राप्त किया था और इस अर्थ में ये पैस्टालॉजी के शिष्य थे। परन्तु इन्होंने अपने किसी भी पूर्व विचारक का अन्धानुकरण नहीं किया, इन्होंने स्वयं सोचा, स्वयं प्रयोग किए

Scanned with CamScanner

और स्वयं निर्णय निकाले और इन्हीं निर्णयों को अपने जीवन में प्रयोग किया और ग्रंथों द्वारा प्रकाशित किया। यहाँ इनके शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोगों का क्रमबद्ध वर्णन प्रस्तुत है।

शिक्षा का सम्प्रत्यय

फ्रोबेल ने देखा कि बीज में सम्पूर्ण पौधा अथवा वृक्ष निहित है, उसमें पूर्ण पौधे अथवा वृक्ष के रूप में विकसित होने की क्षमता है, बस उसे आवश्यक मिट्टी, हवा, जल व सूर्य का प्रकाश उपलब्ध होना चाहिए। इन्होंने देखा कि यही बात संसार के सभी जीव-जन्तुओं एवं मनुष्यों पर लागू होती है। इनकी दृष्टि से मनुष्य की इन आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना अर्थात उनका विकास करना ही शिक्षा है। इनके अपने शब्दों में—"शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है"(Education is a process by which a child makes its internal external)।

शिक्षा के उद्देश्य

फ्रोबेल सर्वेश्वरवादी थे। इनकी दृष्टि से ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है। अतः अनेकता में इस एकता को जान लेना ही मनुष्य जीवन का प्रयोजन है, लक्ष्य है, आदर्श है। अब प्रश्न उठता है, यह ज्ञान कैसे प्राप्त होगा। इसका उत्तर है नैतिक नियमों का पालन करने से। सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् को ये नैतिक नियम मानते थे और बच्चों में प्रारम्भ से ही इन नियमों के विकास पर बल देते थे। पर इनका विकास करने के लिए सामाजिक जीवन आवश्यक मानते थे, इसलिए मनुष्य को पहले सामाजिक जीवन जीने में कुशल बनाने पर बल देते थे। ये सत्य-असत्य में भेद करने के लिए मनुष्य के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास को आवश्यक मानते थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा के यही उद्देश्य होने चाहिए। इन उद्देश्यों को हम आज की भाषा में निम्नलिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं—

साध्य उद्देश्य

(1) मनुष्य को अपने दैवी स्वरूप (आत्मा) और संसार की आत्मिक एकता का ज्ञान एवं अनुभूति कराना।

साधन उद्देश्य

(1) बच्चों का शारीरिक एवं बौद्धिक विकास करना।

(2) बच्चों का सामाजिक विकास करना, उन्हें समाजोपयोगी नैतिक व्यवहार में प्रशिक्षित करना।

(3) बच्चों को नैतिक नियमों के पालन की ओर प्रवृत्त करना, उनका चारित्रिक विकास करना।

(4) बच्चों के दैवीय तत्त्वों का विकास करना, उन्हें पवित्र जीवन जीने की ओर प्रवृत्त करना।

शिक्षा की पाठ्यचर्या

यूरोप के शिक्षा जगत में पैस्टालॉजी पहले व्यक्ति थे जिन्होंने शिक्षा को मनोविज्ञान पर आधारित किया। फ्रोबेल ने अपने गुरु के इस विचार को आगे बढ़ाया। ये मनुष्य के विकास क्रम को समझते थे और यह मानते थे कि भिन्न आयु वर्ग के बच्चों में यह विकास भिन्न-भिन्न रूप में

Scanned with CamScanner

होता है। इन्होंने शिक्षा की पाठ्यचर्या के निर्माण के सम्बन्ध में निम्नलिखित सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया—

(1) पाठ्यचर्या के पाठ्य विषय एवं क्रियाएँ बच्चों की शारीरिक एवं मानसिक क्षमता के आधार पर निश्चित किए जाने चाहिए।

(2) पाठ्यचर्या के समस्त विषय एवं क्रियाओं में आपसी सम्बन्ध होना चाहिए, एकता होनी चाहिए।

(3) पाठ्यचर्या ऐसी हो जिसे क्रियाओं द्वारा पूरा किया जा सके।

(4) पाठ्यचर्या मनुष्य के विकास सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए।

फ्रोबेल के अनुसार मनुष्य की प्रारम्भिक अवस्था—बचपन अवस्था (Childhood) है, खेल की अवस्था है अतः इस स्तर पर बच्चों को स्वतन्त्र रूप से विकास के अवसर प्रदान करने चाहिए, दूसरी अवस्था—बाल अवस्था (Boyhood) है, इस स्तर पर बालकों को विभिन्न व्यवसाय सीखने के अवसर देने चाहिए और तीसरी अवस्था—युवास्था (Youth) है, इस स्तर पर युवकों को सामाजिक जीवन की शिक्षा देनी चाहिए। इन्होंने विशेष रूप से 4 वर्ष से 8 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा पर विचार व्यक्त किए हैं और उन्हीं के लिए पाठ्यचर्या प्रस्तुत की है—

(1) खेलकूद एवं व्यायाम
(2) भाषा ज्ञान
(3) कला एवं संगीत
(4) प्रकृति निरीक्षण
(5) इतिहास एवं भूगोल
(6) विज्ञान एवं गणित
(7) धार्मिक शिक्षा (ईसाई धर्म की शिक्षा)

शिक्षण विधि

फ्रोबेल ने मुख्य रूप से 4 वर्ष से 8 वर्ष तक के बालकों की शिक्षा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए हैं और उन्हीं की शिक्षा हेतु 'किण्डर गार्टन प्रणाली' का विकास किया है। यहाँ किण्डर गार्टन प्रणाली के सिद्धान्त और कार्य विधि का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत है।

किण्डर गार्टन प्रणाली के आधारभूत सिद्धान्त

फ्रोबेल के शैक्षिक सिद्धान्त आदर्शवादी दर्शन और मनोविज्ञान पर आधारित हैं। इनकी किण्डर गार्टन प्रणाली निम्नलिखित सिद्धान्तों पर आधारित है—

1. एकता का सिद्धान्त (Principle of Unity)—फ्रोबेल आदर्शवादी दार्शनिक थे। वे संसार की समस्त विविधता में एकता देखते थे। फ्रोबेल अपने बच्चों को इस एकता की अनुभूति कराना चाहते थे। उन्होंने उन्हें इस एकता की अनुभूति कराने के लिए अनेक उपहारों का निर्माण किया था। इस सबका अन्तिम उद्देश्य विभिन्नता के पीछे छिपी एकता अर्थात् ईश्वर की अनुभूति कराना था।

Scanned with CamScanner

2. ज्ञान को अन्दर से बाहर निकालने का सिद्धान्त (Principle of Making Internal External) – फ्रोबेल यह मानते थे कि मनुष्य ज्ञान प्राप्त करने की शक्तियाँ लेकर पैदा होता है, ज्ञान प्राप्त करना उसका स्वाभाविक लक्षण है, बस उसे ऐसा बाह्य पर्यावरण देना चाहिए कि उसका ज्ञान सही दिशा में विकसित हो। ज्ञान अथवा क्रियाओं को बच्चों पर ऊपर से थोपना नहीं चाहिए, उन्हें ऐसा पर्यावरण देना चाहिए कि वे स्वयं उन्हें प्राप्त करने को उत्सुक हों, प्रयत्नशील हों।

3. स्वतन्त्रता का सिद्धान्त (Principle of Freedom) – फ्रोबेल बच्चों के स्वाभाविक विकास के लिए स्वतन्त्रता को आवश्यक मानते थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि बच्चों के स्वाभाविक विकास में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने से उनका विकास कुण्ठित हो जाता है। परन्तु रूसो द्वारा प्रतिपादित स्वतन्त्रता का वे विरोध करते थे। वे बच्चों को उच्छृंखल बनने की स्वतन्त्रता नहीं देते थे। उनकी दृष्टि में स्वतन्त्रता की भी सीमा होनी चाहिए; किसी भी बच्चे को उसी सीमा तक स्वतन्त्रता होनी चाहिए जिस सीमा तक उसके विचार अथवा क्रियाओं से दूसरों को कोई हानि न हो। पूर्ण स्वतन्त्रता की स्थिति में भी हमें अपने समाज के अन्य सदस्यों की सुख-सुविधा का ध्यान रखना चाहिए। फ्रोबेल को अपने बचपन में प्रेम और सहानुभूति के दर्शन नहीं हुए थे इसलिए वे प्रेम व सहानुभूति के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने अपनी शिक्षण प्रणाली में प्रेम और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार पर सबसे अधिक बल दिया है।

4. आत्म क्रिया का सिद्धान्त (Principle of Self Activity) – फ्रोबेल विकास को एक आन्तरिक क्रिया मानते थे, इसलिए वे बच्चों को आत्मक्रिया करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करने पर बल देते थे। फ्रोबेल के अनुसार बालक की प्रमुख विशेषता आत्मक्रिया ही है। आत्मक्रिया से तात्पर्य उस क्रिया से होता है जिसके करने की इच्छा बच्चों में स्वयं होती है और जिसे वे रुचि के साथ करते हैं। बच्चों के व्यक्तित्व का वास्तविक विकास उनकी आत्मक्रिया पर ही आधारित होता है। फ्रोबेल की दृष्टि से आत्मक्रिया का महत्त्व भौतिक विकास तक ही सीमित नहीं है अपितु इससे बच्चों का आध्यात्मिक विकास भी होता है। उनके अपने शब्दों में—अनन्त दैवी सिद्धान्त मनुष्य से स्वतन्त्र आत्मक्रिया की मांग करता है।

5. खेल द्वारा सीखने का सिद्धान्त (Principle of Learning by Play Way Method) – फ्रोबेल ने बच्चों की प्रकृति का अध्ययन किया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि खेल क्रिया में उनकी स्वाभाविक रुचि होती है इसलिए इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में खेल विधि के महत्त्व को स्वीकार किया। इन्होंने स्पष्ट किया कि खेल विधि में बच्चो को आत्म प्रकाशन की पूरी स्वतन्त्रता रहती है, इसलिए वे उसमें रुचि लेते हैं और क्रियाशील रहते हैं। इस प्रकार खेल विधि में ऊपर के दोनों सिद्धान्तों का पालन होता है।

6. सामाजिक सहयोग का सिद्धान्त (Principle of Social Participation) – फ्रोबेल इस बात को जानते थे कि मनुष्य में सामूहिकता की मूल प्रवृत्ति होती है जो उसे सामाजिक प्राणी बनाती है। वे इस बात को भी स्वीकार करते थे कि मनुष्य का किसी भी प्रकार का विकास उसके सामाजिक पर्यावरण में ही सम्भव होता है। घर, विद्यालय तथा समाज मनुष्य को आत्मक्रिया के अवसर प्रदान करते हैं; अतः बच्चों को सामाजिक कार्यों में भाग अवश्य लेना चाहिए। यही कारण है कि फ्रोबेल ने अपनी इस प्रणाली में सामूहिक रूप से खेलने-कूदने, बातचीत करने और अन्य क्रियाओं को करने के स्वतन्त्र अवसर प्रदान किए हैं।

Scanned with CamScanner

किण्डर गार्टन प्रणाली में आत्माभिव्यक्ति के साधन

किण्डर गार्टन प्रणाली में आत्माविभक्ति को सबसे अधिक महत्त्व दिया जाता है और इस आत्माभिव्यक्ति के लिए फ्रोबेल ने तीन साधनों का विधान किया है; यथा—

(1) गीत (Song)
(2) गति (Gesture)
(3) रचना (Construction)

आत्माभिव्यक्ति के ये तीनों साधन पृथक होते हुए भी एक ही होते हैं। उदाहरण के लिए बालक किसी कहानी को सुनकर उस पर कोई गीत गा सकते हैं, गीत गाते समय अभिनय कर सकते हैं अथवा उस कहानी की कथावस्तु को नाटक के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं और उससे सम्बन्धित चित्र बना सकते हैं।

किण्डर गार्टन प्रणाली में प्रयोग की जाने वाली सामग्री तथा साधन

बच्चों को आत्मक्रिया के लिए अवसर प्रदान करने तथा उन्हें खेल द्वारा शिक्षा देने के लिए फ्रोबेल ने विभिन्न प्रकार की सामग्री तथा साधनों का निर्माण किया है जिनमें निम्नलिखित मुख्य हैं—

1. कहानियाँ (Stories) – कहानियाँ शिक्षण का महत्त्वपूर्ण साधन होती हैं। कहानी सुनने की बच्चों में स्वाभाविक रुचि होती है, इसलिए बच्चों की शिक्षा के लिए फ्रोबेल ने अनेक कहानियों को चुना। कहानियों के प्रयोग से अनेक लाभ होते हैं। कहानियों द्वारा बच्चों को भाषा का ज्ञान कराया जाता है और उनके शब्द भण्डार में वृद्धि की जाती है। इतिहास और भूगोल का ज्ञान भी कहानी विधि से दिया जा सकता है। कहानी द्वारा बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास किया जा सकता है और उनकी रचनात्मक एवं क्रियात्मक शक्ति को सचेत किया जा सकता है। चारित्रिक एवं नैतिक शिक्षा के लिए भी कहानियों का बड़ा महत्त्व है। परन्तु कहानी द्वारा यथा लाभ तभी हो सकते हैं जब इनका प्रयोग रोचक ढंग से किया जाए।

2. खेल (Plays) – फ्रोबेल ने अपनी किण्डर गार्टन प्रणाली में मनोरंजनपूर्ण रचनात्मक खेलों को विशेष स्थान दिया है। इन्होंने मनोरंजनपूर्ण रचनात्मक खेलों में दौड़ने, कूदने और घूमने तथा बालू, मिट्टी तथा गत्ते आदि से विभिन्न वस्तुओं के निर्माण को सम्मिलित किया है। बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास करने के लिए इन्होंने अपनी प्रणाली में काल्पनिक खेलों को स्थान दिया है। काल्पनिक खेलों के लिए इन्होंने विभिन्न प्रकार के उपहारों का निर्माण किया जिनके द्वारा बच्चे अपनी-अपनी कल्पना से नाना प्रकार की आकृतियाँ बनाते हैं। बच्चों में सामाजिक गुणों के विकास के लिए इन्होंने सामूहिक खेलों के महत्त्व को स्वीकार किया है। सामूहिक खेलों में संगीत, नृत्य और नाटकों का विशेष स्थान है। फ्रोबेल ने विभिन्न विषयों के ज्ञान, चरित्र निर्माण और व्यावसायिक शिक्षा के लिए भी अनेक खेल विकसित किए हैं।

3. मातृ खेल एवं शिशु गीत (Mother's Play and Nursery Songs) – ये गीत बच्चों के खेलों, रचनात्मक कार्यों एवं व्यवसाय से सम्बन्धित होते हैं। ये गीत बालकों के लिए बहुत रुचिकर होते हैं और उनके वास्तविक ज्ञान की वृद्धि में सहायक होते हैं। इन गीतों को एक निश्चित

Scanned with CamScanner

क्रम में रखा जाता है; जैसे—यदि खेल में बीज बोने का गीत होता है तो उसके बाद खेत के पौधों की रक्षा सम्बन्धी गीत रखा जाता है और फिर फसल काटने का। बच्चे इन गीतों को गाते हैं और उनकी विषय सामग्री के अनुसार क्रिया (अभिनय) करते हैं। पहले इन गीतों को शिक्षक अभिनय के साथ प्रस्तुत करते हैं और फिर शिक्षक तथा शिष्य एक साथ गाते और अभिनय करते हैं। इन गीतों से बच्चों का शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार का विकास होता है और उनकी सौन्दर्य भावना जागृत होती है।

4. उपहार (Gifts)—फ्रोबेल इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर विशेष बल देते थे और इसके लिए उन्होंने 20 उपहारों का निर्माण किया है। इन उपहारों में निम्नलिखित 7 (सात) उपहार प्रमुख हैं—

पहला उपहार (ऊन की रंगीन गेंदें)—पहले उपहार में विभिन्न रंगों से रंगी ऊन की छह गेंदें होती हैं। ये गेंदें लकड़ी के एक चौखटे पर लटकी होती हैं जिन्हें धागे से इधर-उधर खिसकाया जा सकता है।

इस उपहार से विभिन्न प्रकार का इन्द्रिय ज्ञान कराया जाता है। गेंदों के रंगों एवं उनकी गति से आँखों को प्रशिक्षित किया जा सकता है, ध्वनि से कानों को और उनको स्पर्श करके कठोरता एवं कोमलता का ज्ञान कराया जा सकता है। यदि इस खेल को गति के साथ खेला जाए तो शरीर के पुट्ठे मजबूत होते हैं। इसी खेल को जब बच्चे मिल-जुल कर खेलते हैं तो उनमें सामाजिक गुणों का विकास होता है।

दूसरा उपहार (गोले, बेलन तथा घन)—दूसरे उपहार में लकड़ी का बना एक गोला, एक बेलन तथा एक घन होता है। ये सभी एक बॉक्स में रख दिए जाते हैं और धागे की सहायता से लटका दिए जाते हैं।

इस उपहार द्वारा बच्चों को विभिन्न आकार की वस्तुओं का ज्ञान कराया जाता है तथा उनकी विशेषताओं से परिचित कराया जाता है। इस उपहार की सहायता से बच्चों की स्पर्श शक्ति का भी विकास किया जाता है। यह उपहार अन्य उपहारों को समझने एवं उनके उपयोग करने के लिए एक आधार प्रस्तुत करता है।

तीसरा उपहार (आठ बराबर घनों का एक बड़ा घन)—इस उपहार में चार इंच के एक घन को आठ बराबर भागों में विभाजित करके तैयार किए आठ घन होते हैं जो एक लकड़ी के बॉक्स में रखे रहते हैं। बॉक्स में इन घनों को खिसकाने वाला एक ढ़क्कन होता है।

इस उपहार से बालकों की अन्वेषण सम्बन्धी प्रवृत्ति को क्रियाशील किया जाता है। इन आठ घनों से बच्चे बड़े घन और विभिन्न डिजाइन तैयार करते हैं। इससे उनकी रचनात्मक प्रवृत्ति को सन्तुष्टि मिलती है और वे क्रियाशील होते हैं। उनकी इन्द्रियों को प्रशिक्षण भी मिलता है। विभिन्न डिजाइन बनाने में बच्चों की कल्पना शक्ति का भी विकास होता है। एक घन में आठ घन और आठ घनों में एक घन, इससे एकता में अनेकता और अनेकता में एकता का आभास भी होता है।

चौथा उपहार (आठ बराबर घनों का एक छोटा घन)—इस उपहार में एक इंच के घन को आठ बराबर आयताकार भागों में विभाजित किया जाता है और आठों आयताकार ठोसों को एक डिब्बे में रख दिया जाता है।

Scanned with CamScanner

यह उपहार तीसरे उपहार का ही एक रूप होता है, परन्तु उससे थोड़ा जटिल होता है। इन आयताकार ठोसों द्वारा बच्चे तीसरे उपहार की अपेक्षा अधिक कठिन एवं जटिल डिजाइनों को बनाते हैं। इन उपहारों से मेज, कुर्सी, मकान का दरवाजा तथा मकान के विभिन्न डिजाइन बनाए जा सकते हैं। इस उपहार की वही उपयोगिता है जो तीसरे उपहार की होती है, केवल डिग्री का अन्तर होता है।

पाँचवा उपहार (सत्ताइस बराबर घनों का एक घन)—यह उपहार पहले चारों उपहारों से जटिल होता है। तीन इंच के एक घन को 27 बराबर घनों में विभाजित किया जाता है। इन घनों में से तीन घनों को विकर्ण की सीध से काटकर छह बराबर के टुकड़े तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार के उपहार में केवल समकोण वाले ही ठोस नहीं होते अपितु न्यूनकोण वाले ठोस भी होते हैं। इस उपहार से बच्चे लम्बी तथा क्षैतिज रेखा से युक्त डिजाइनों के अतिरिक्त तिरछी रेखा वाले डिजाइन भी बनाते हैं।

इस उपहार से भी उन्हीं शक्तियों का विकास होता है जिनका तीसरे और चौथे उपहारों से, बस डिग्री का अन्तर होता है। इस उपहार से बच्चों में नवीन वस्तुओं के निर्माण की शक्ति का अधिक विकास होता है। इसके प्रयोग से भी अनेकता में एकता का आभास होता है। यह उपहार बड़े बच्चों के लिए ही होता है।

छठा उपहार (सत्ताईस बराबर आयताकार ठोसों का एक घन)—इस उपहार में पाँचवें उपहार के बराबर के घन को 27 आयताकार ठोसों में विभाजित किया जाता है। छह आयताकार ठोसों को बीच से काटकर बारह आयताकार ठोस बनाए जाते हैं। तीन अन्य आयताकार ठोसों को लम्बाई में विभाजित करके छह स्तम्भ बनाए जाते हैं। इस उपहार द्वारा मकान के और जटिल रूप तैयार किए जा सकते हैं और उसे फर्नीचर आदि से भी सजाया जा सकता है।

इस उपहार की उपयोगिता भी वही है जो अन्य उपहारों की होती है। हाँ, डिग्री में यह और आगे बढ़ जाता है। यह उपहार भी बड़े बच्चों के लिए होता है।

सातवाँ उपहार (लकड़ी के बने विभिन्न आकार के टुकड़े)—इस उपहार में पाँच बाक्स होते हैं जिनमें विभिन्न रंगों से रंगे लकड़ी के गुटके रखे होते हैं। पहले बाक्स में समान माप के वर्गाकार गुटके होते हैं, दूसरे में समकोण त्रिभुज के आकार के गुटके होते हैं जिनको वर्गाकार गुटकों के विकर्णों को काटकर बनाया जाता है, तीसरे बॉक्स में समत्रिबाहु त्रिभुज के आकार के गुटके होते हैं जिनके माप भिन्न-भिन्न होते हैं और पाँचवें बाक्स में अधिक कोण त्रिभुज के आकार के गुटके होते हैं।

इन गुटकों से बच्चे किश्ती, कबूतर, पहाड़ आदि के विभिन्न डिजाइन बनाते हैं। यह अपेक्षाकृत और भी जटिल उपहार होता है।

अन्य उपहार—अन्य उपहारों में लकड़ी की छड़ें, डण्डे, कुण्डली आदि होते हैं। इनकी सहायता से बच्चे अक्षर, कोण तथा विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाते हैं।

5. व्यापार (Occupation)—जब अनुभवों को कहकर, लिखकर, चित्र के रूप में अभिव्यक्त करके या वस्तु रूप में निर्मित करके अभिव्यक्त किया जाता है तो वे दृढ़ हो जाते हैं। इसी सत्य को सामने रखकर किण्डर गार्टर प्रणाली में विभिन्न प्रकार के व्यापार रखे गए हैं। ये व्यापार अनेक

Scanned with CamScanner

प्रकार के होते हैं; जैसे—चित्र बनाना, कागज काटना, माला गूँथना, मिट्टी के खिलौने बनाना, चटाई बुनना, टोकरी बनाना, सूत कातना, कपड़ा बुनना, कपड़ा सीना, गाना, नाचना और व्यायाम।

इन व्यापारों को कठिनाई के क्रम में रखा जाता है। पहले बच्चों से सरल व्यापार कराए जाते हैं, फिर उनसे कठिन और फिर उनसे भी अधिक कठिन। उदाहरण के लिए, यदि मिट्टी के खिलौने बनाने का व्यापार चुना जाए तो सबसे पहले मिट्टी की गोल गेंद बनवाई जाए, फिर सेव, नाशपाती और नांरगी आदि और इनके बाद खरबूजा बनवाया जाए। इसी प्रकार अन्य व्यापारों को भी सरल से कठिन के क्रम में संजोना चाहिए।

ये सभी व्यापार खेल तथा क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर आधारित होते हैं इसलिए बालक इनमें रुचि लेते हैं। बच्चे इन व्यापारों को मिल-जुलकर करते हैं जिससे उनमें सामाजिकता का विकास होता है। व्यापारों को करने से बच्चों की रचनात्मक कल्पना का भी विकास होता है।

किण्डर गार्टन की कार्य योजना

किण्डर गार्टन प्रणाली में स्कूल के दैनिक कार्यों को दो पारियों में विभाजित किया जाता है। प्रथम पारी में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा, इन्द्रिय प्रशिक्षण, लिखना-पढ़ना, और अंकगणित की शिक्षा की व्यवस्था होती है और दूसरी पारी में अन्य सब विषयों के शिक्षण और क्रियाओं के सम्पादन की व्यवस्था होती है। इस प्रणाली में भिन्न-भिन्न विषयों का शिक्षण एवं क्रियाओं का प्रशिक्षण भिन्न-भिन्न विधियों से किया जाता है।

1. धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा—इसके लिए स्कूल का प्रारम्भ दैनिक सामूहिक सभा से होता है। इसमें सर्वप्रथम सभी शिक्षिकाएँ और छात्र-छात्राएँ सामूहिक रूप से ईश प्रार्थना करते हैं। उसके बाद शिक्षिकाएँ बच्चों को छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से धर्म और नैतिकता की ओर उन्मुख करती हैं।

2. इन्द्रिय प्रशिक्षण—इसके लिए उपहारों का प्रयोग किया जाता है। फ्रोबेल ने इन्द्रियों को प्रशिक्षित करने के लिए भिन्न-भिन्न उपहारों का निर्माण किया है।

3. पढ़ना-लिखना सिखाना—इस प्रणाली में पढ़ना-लिखना दोनों एक साथ सिखाए जाते हैं। वर्णों (अक्षरों) के साथ शब्दों का ज्ञान कराया जाता है और शुद्ध उच्चारण की शिक्षा दी जाती है। इसी के साथ बच्चों को लकड़ी के टुकड़े जोड़-जोड़कर खेल-खेल में अक्षर बनाने का अभ्यास कराया जाता है। इसी समय शिक्षिकाएँ श्यामपट पर अक्षर बनाती हैं और बच्चे उनका अनुकरण कर श्यामपट अथवा अपनी कापियों पर अक्षर लिखने का अभ्यास करते हैं। मौखिक भाषा का विकास प्रकृति निरीक्षण, खेल-कूद, उपहारों के प्रयोग तथा व्यापारों के सम्पादन के साथ-साथ स्वाभाविक रूप से किया जाता है।

4. अंकगणित की शिक्षा—अंकगणित का ज्ञान लकड़ी व पत्थरों के टुकड़ों तथा धातुओं की गोलियों के प्रयोग से स्वाभाविक रूप में कराया जाता है। बच्चे इन्हें गिनते हैं, इनका आपस में आदान-प्रदान करते हैं और इस प्रकार गिनना, जोड़ना और घटाना सीखते हैं। अंकों का ज्ञान अक्षरों के ज्ञान की तरह ही कराया जाता है और गिनती तथा पहाड़ों का अभ्यास व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनो रूपों में कराया जाता है। गणितीय आकृतियों के स्थूल ज्ञान के लिए उपहारों का प्रयोग किया जाता है।

Scanned with CamScanner

प्रथम पारी की समाप्ति पर अवकाश दिया जाता है। इस समय बच्चे जलपान करते हैं, विश्राम करते हैं और अपनी रुचि के अनुसार अन्य क्रियाएँ करते हैं।

5. खेलकूद, शारीरिक व्यायाम और संगीत शिक्षा—दूसरी पारी का प्रारम्भ खेलकूद, शारीरिक व्यायाम और संगीत शिक्षा से होता है। यह कार्य सामूहिक रूप से होता है; बच्चे इनमें सामूहिक रूप से भाग लेते हैं और शिक्षिकाएँ यह प्रयत्न करती हैं कि किसी भी समय और किसी भी स्तर पर बच्चों की इन क्रियाओं में रुचि बनी रहे।

6. अन्य विषयों का शिक्षण—खेलकूद एवं संगीत शिक्षा के बाद कला, प्रकृति विज्ञान, इतिहास एवं भूगोल की शिक्षा तथा व्यापारों में प्रशिक्षण प्रारम्भ होता है। प्रकृति विज्ञान का ज्ञान प्रकृति निरीक्षण द्वारा कराया जाता है। इतिहास तथा भूगोल की शिक्षा कहानियों, चित्रों और उपहारों की सहायता से दी जाती है। प्रयत्न यह किया जाता है कि समस्त ज्ञान को स्थूल से सूक्ष्म के क्रम में विकसित किया जाए। व्यापारों का चुनाव बच्चों की आयु और रुचियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। व्यापारों में प्रशिक्षिण भी सामूहिक रूप से दिया जाता है। शिक्षिकाएँ पथ प्रदर्शन करती हैं और बच्चे व्यापारों का सम्पादन करते हैं।

अनुशासन

फ्रोबेल बच्चों के दैवी स्वरूप से परिचित थे, ये बच्चों को सम्मान देते थे और इसीलिए दमनात्मक अनुशासन के स्थान पर आन्तरिक अनुशासन को महत्त्व देते थे। इनका स्पष्टीकरण था कि बालक में आत्मानुशासन की भावना आने पर वह समाज में भी अनुशासित व्यवहार करेगा। इनकी दृष्टि से आत्मानुशासन के लिए विवेक आवश्यक है, बिना विवेकपूर्ण सचेतन निर्देशन के बालक्रिया निरूद्देश्य खेल के रूप में बिगड़ जाती है। इसलिए बालक को सीमित व नियमानुकूल स्वतन्त्रता देनी चाहिए। पर इसका यह अर्थ नहीं कि बालक को स्वतन्त्रता न दी जाए। उसे स्वतन्त्रता दी जाए पर यह स्वतन्त्रता आत्मनियन्त्रित होनी चाहिए।

शिक्षक

फ्रोबेल की शिक्षा पद्धति में बालक शिक्षा का केन्द्र होता है लेकिन इसमें शिक्षक का उत्तरदायित्व कम नहीं है। फ्रोबेल के अनुसार—विद्यालय रूपी बाग में शिक्षक रूपी माली शिक्षार्थी रूपी पेड़-पौधों के उचित विकास के लिए उत्तरदायी हैं। उन्हें बच्चों को अपने स्वाभाविक विकास के लिए वातावरण देना चाहिए और उनके स्वाभाविक विकास में सहायक होना चाहिए। फ्रोबेल की दृष्टि से शिशु शिक्षिकाओं को बहुत संवेदनशील और मातृतुल्य व्यवहार करने वाला होना चाहिए। इसलिए ये इस स्तर पर केवल महिलाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थे। इनका तर्क था कि महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं और शिशुओं की समस्याओं को अपेक्षाकृत अधिक समझती हैं।

शिक्षार्थी

फ्रोबेल इस तथ्य से परिचित थे कि कोई भी प्राणी अपनी अन्तर्निहित क्षमता के अनुसार विकास करता है। इसलिए ये शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र मानते थे। इन्होंने उद्घोष किया कि शिशुओं को अपने विकास के स्वतन्त्र अवसर देने चाहिए और शिशु शिक्षा की सम्पूर्ण योजना उनकी नैसर्गिक योग्यताओं, रुचियों और आवश्यकताओं के आधार पर बनानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

विद्यालय

फ्रोबेल ने केवल शिशु विद्यालयों के विषय में विचार व्यक्त किए हैं। इन्होंने शिशु विद्यालयों को शिशुओं के बाग की संज्ञा दी है। बाग एक प्रकार का वातावरण होता है जहाँ माली पेड़-पौधों की देखभाल करता है। यहाँ शुद्ध एवं शीतल वायु, सुखद एवं शान्त वातावरण होता है। फ्रोबेल की दृष्टि से विद्यालयों का वातावरण भी ऐसा ही होना चाहिए। वहाँ शुद्ध वायु एवं प्रकाश उपलब्ध हो, वहाँ का वातावरण बाग की तरह सुन्दर एवं आकर्षक हो, वहाँ शिक्षकाएँ माली की तरह बच्चों रूपी पेड़-पौधों के विकास के लिए उनकी उचित देखभाल करें।

किण्डर गार्टन का अपना एक स्वरूप होता है। इनके भवन, फर्नीचर, खेल के मैदान, खेल सामग्री व उपहार आदि सब कुछ बच्चों की रुचियों को ध्यान में रखकर बनाए व चुने जाते है। इनमें केवल महिला शिक्षिकाओं की ही नियुक्ति की जाती है क्योंकि वे बच्चों की आवश्यकताओं को आसानी से पहचान सकती हैं और उनके साथ मातृतुल्य व्यवहार कर सकती हैं। कुल मिलाकर किण्डर गार्टन बच्चों की प्रकृति के अनुकूल होते हैं, उनके लिए आकर्षक का केन्द्र होते हैं, बच्चे वहाँ स्वेच्छा से जाते हैं, दौड़कर जाते हैं और यदि ऐसा नहीं है तो समझिए कि आप अपने स्कूल को किण्डर कार्टन का रूप नहीं दे पाए हैं। किण्डर गार्टन स्कूल की समय सारिणी निश्चित होती है। स्कूल का समय मौसम के अनुसार निश्चित किया जाता है और प्रत्येक घण्टा 20-25 मिनट का होता है।

शिक्षा के अन्य पक्ष

जन शिक्षा—फ्रोबेल ने शिक्षा पर समग्र रूप से चिन्तन नहीं किया है परन्तु जब वे अनेकत्व में एकत्व भाव की अनुभूति की बात करते हैं तो यह अनुभूति बिना किसी भेद-भाव के सबको कराना चाहते हैं। आज यदि वे होते तो इसके लिए जन शिक्षा की वकालत अवश्य करते।

स्त्री शिक्षा—फ्रोबेल ने स्त्री शिक्षा पर भी अलग से कुछ नहीं लिखा है पर वे इनकी शिक्षा के पक्षधर थे।

व्यावसायिक शिक्षा—फ्रोबेल ने केवल शिशु शिक्षा पर विचार किया है इसलिए व्यावसायिक शिक्षा की ओर इनका ध्यान नहीं गया।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा—फ्रोबेल धर्मप्रधान व्यक्ति थे, सर्वेश्वरवादी थे, शाश्वत नैतिक नियमों—सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् में विश्वास करते थे और धर्म के नाम पर ईसाई धर्मावलम्बी थे। इन्होंने शिशु शिक्षा में इन सबकी शिक्षा पर सबसे अधिक बल दिया है। इनके विचार से धर्म एवं नैतिकता की नींव शिशुकाल में रखी जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner